पंजाब केसरी 15/02/2026

गांधी मैमोरियल नैशनल कॉलेज में संस्कृत शास्त्रीय ज्ञान आधारित नई अनुसंधान पद्धति पर हुआ राष्ट्रीय वैबीनार

अम्बाला, 14 फरवरी (बलराम): छावनी स्थित गांधी मैमोरियल नैशनल कॉलेज के संस्कृत विभाग द्वारा लैंग्वेज लैब, भारतीय ज्ञान परंपरा प्रकोष्ठ एवं इतिहास विभाग के संयुक्त तत्वावधान में 'औपनिवेशीकृत सामाजिक, विज्ञान, कला, भाषा, साहित्य, वाणिज्य, प्रबंधन अध्ययन और विज्ञान के लिए संस्कृत शास्त्रीय ज्ञान पर आधारित नई अनुसंधान पद्धति का पुनर्गठन' विषय पर एक राष्ट्रीय वैबीनार का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य भारतीय ज्ञान परंपरा के आधार पर अनुसंधान की नई दिशा और दृष्टि पर गंभीर विमर्श करना था। वैबीनार में राज्य एवं देश के विभिन्न विश्वविद्यालयों और शोध संस्थानों से बड़ी संख्या में विषय विशेषज्ञ, प्राध्यापक, शोधार्थी, शिक्षाविद तथा विद्यार्थियों ने सहभागिता की।

अपने विचार व्यक्त करते हुए विशेषज्ञों ने कहा कि वर्तमान शिक्षा प्रणाली आज भी औपनिवेशिक काल की अनुसंधान पद्धतियों से प्रभावित है, जिसके कारण भारतीय शास्त्रीय ज्ञान को अपेक्षित महत्व नहीं मिल पाता।

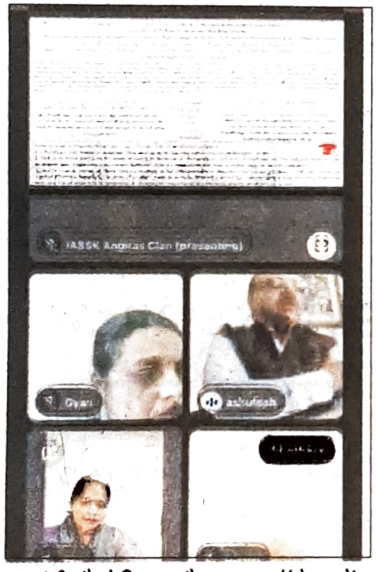

गांधी मैमोरियल नैशनल कॉलेज में संस्कृत शास्त्रीय ज्ञान आधारित नई अनुसंधान पद्धति पर आयोजित राष्ट्रीय वैबीनार में भाग लेते विशेषज्ञ।

उन्होंने बताया कि वेद, उपनिषद्, न्याय मीमांसा, वेदांत और अर्थशास्त्र जैसे संस्कृत शास्त्रों में अनुसंधान की सुदृढ़, तार्किक एवं प्रमाण आधारित परंपरा विद्यमान है।

इन ग्रंथों में प्रमाण, तर्क, विश्लेषण और समग्र दृष्टिकोण को विशेष महत्व दिया गया है, जो समकालीन शोध कार्यों के लिए अत्यंत प्रासंगिक और उपयोगी है।

वक्ताओं ने शोध को समाज हित, नैतिक मूल्यों और सांस्कृतिक आत्मनिर्भरता से जोड़ने की आवश्यकता पर बल दिया।

कार्यक्रम में यह भी रेखांकित किया गया कि प्रस्तावित नई अनुसंधान पद्धति को सामाजिक विज्ञान, प्रबंधन, वाणिज्य, साहित्य तथा विज्ञान सहित विभिन्न विषयों में प्रभावी रूप से लागू किया जा सकता है। इससे भारतीय संदर्भों पर आधारित, मूल्यपरक और समाजोपयोगी शोध को नई दिशा मिलेगी।

महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. रोहित दत्त ने आयोजन समिति की सराहना करते हुए कहा कि इस प्रकार के राष्ट्रीय स्तर के वैबीनार न केवल अकादमिक वातावरण को सुदृढ़ करते हैं, बल्कि शिक्षकों एवं शोधार्थियों को नवीन दृष्टिकोण भी प्रदान करते हैं। उन्होंने संस्कृत शास्त्रों को आधुनिक अनुसंधान पद्धति से जोड़ने के प्रयास को अभिनव एवं सराहनीय बताया।

कार्यक्रम के अंत में आयोजकों प्रियंका बालदिया, डॉ. अनीश, डॉ. धर्मवीर एवं कमलप्रीत कौर ने सभी प्रतिभागियों, वक्ताओं और सहयोगियों का आभार व्यक्त किया तथा भविष्य में भी भारतीय ज्ञान प्रणाली पर आधारित अनुसंधान विषयों पर ऐसे अकादमिक कार्यक्रम आयोजित करने का संकल्प दोहराया।